ISBN: 978-81-974088-0-9

8. समाज की सोच और दिव्यांग बालक वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डी. पी. कोरी

प्राचार्य, प्राणीशास्त्र विभाग,
शा महाविघालय बिश्रामपूर.

भारती कोरी

बी.एस.सी, 6 सेम,
शा बिलासा कन्या स्नात्कोत्तर महाविद्यालय,
बिलासपूर.

लवली कोरी

छात्रा, 12वी,
शा. उ. मा. कन्या शाला सकरी.

सारांश :–

संर्पूण विश्व में एक दिन में लगभग 3,71,504 बच्चे जन्म लेते है। अर्थात 6,192 बच्चे हर मिनट और 103 बच्चे , हर सेकण्ड । तो फिर संसार की आबादी संतुलित कैसे है ? इसका उत्तर है , कि जहॉ 3,71,504 बच्चे प्रतिदिन जन्म लेते है , वहीं 150,000 लोग प्रतिदिन मृत्यु को प्राप्त होते है। इसी कारण हमारी पृथ्वी की आबादी प्राकृतिक रुप से संतुलित है , परंतु यह अभी भी पर्याप्त नहीं हैं । दुनिया के किसी कोने में जहॉ एक ओर , परिवार में आए नए सदस्य के लिए आनंद भरा माहौल होता है , जश्न मनाया जाता है , वहीं दुसरी ओर परिवार से एक सदस्य के जाने का शोक मनाया जाता हैं । यहीं संसार की रीति है । जिसका जन्म हुआ है , उसकी मृत्यु निश्चित हैं। सभी जीव अपने–अपने कर्मो के अनुसार इस संसार में जन्म लेते है व मृत्यु को प्राप्त होते है। पंरतु समाज इन कर्मो को अपने वश में करने की कोशिश करता हैं , नवजात के जन्म से अपनी आशाएं जोड़ लेता है। समाज की आशाएं भी अनेको प्रकार की एवं बड़ी अजीबो – गरीब होती है. जैसे – बच्चा शारिरिक व मानसिक दोनो तरीको से स्वस्थ व पुष्ट होना चाहिए , और वगैरा – वगैरा । नवजात के जन्म से लेकर मृत्यु तक , समाज की आशाएं कभी समाप्त होती नही और अगर नवजात इनकी आशाओ पर खड़ा नही उतरता है , अर्थात अगर नवजात जन्म से ही या जन्म के पश्चात **‘ दिव्यांगता ’** का शिकार हो जाता है , तो यह समाज उसे स्वीकार नही करता , जीवन भर

उन्हें ताने मारता व कोसते रहता है। प्रत्येक दिव्यांग को अपने पूरे जीवन काल में अनेकों प्रकार की समस्याओ का सामना करना पड़ता हैं , जिनपे अगर गौर किया जाए तो प्रश्न हम स्वयं पर उठाऐंगे , कि इंसानियत के भाव से हमनें इनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए किया क्या है? उनकी ऐसी क्या गलती थी , जो उन्हें इन सब समस्याओ का सामना करना पड़ रहा है? अब समय है , उनके लिए , उनके साथ खड़े होने की , उनके जीवन को बेहतर बनाने की एवं सबसे महत्वपूर्ण , इन्हें हीन भावना से देखना , बंद करने की।

भारत सरकार भी इसे अब काफी गंभीर रुप से ले रही है व इन्हें अपने अधिकारों से वंचित ना होना पड़े इसलिए बड़े पैमाने पर लगातार प्रयास कर रही है ।

दिव्यांगजनो की सुविधा हेतु अनेक प्रकार की योजनाएँ केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित है जैसे – दिव्यांग पेंशन योजना व सहायक उपकरण योजना इत्यादि । जिनके माध्यम से दिव्यांगजनो को शिक्षा , भरण – पोषण , शल्य चिकित्सा एवं कल्याण आदि की सुविधा प्रदान की जाती है , जो कि दिव्यांगो के जीवन को सरल बनाने मे कारगर साबित हुई है ।

रुपरेखा –

- ❖ परिचय
- ❖ समाज की धारणा
- ❖ विभिन्न समस्याएँ
- ❖ सरकार के प्रयास एवं योजना
- ❖ उपसंहार
- ❖ संदर्भ

परिचय :–

सभी जीव अपने – अपने कर्मो के अनुसार इस संसार में जन्म लेते है व जन्म के पश्चात भी मृत्यु तक अपने कर्मो को भोगते रहते है। संसार में उन्हें अपने कर्मो के आधार पर ही योनियों की प्राप्ति होती है। मनुष्य योनि में जन्म लेने पर भी कई बार जीवों में अनन्य भेद होते है ,

जैसे – पैरो का काम न करना , हाथो का काम न करना , दिखाई नहीं देना या सुनाई नहीं देना इत्यादि। ये भेद जन्म से ही या जन्म के पश्चात भी मनुष्य को हो सकते है। इन भेद के कारण , मनुष्य को अपने जीवन में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे मनुष्यों को सामान्यत : दिव्यांग की परिभाषा दी गई है।

आसान शब्दों में दिव्यांगता एक ऐसी अवस्था है जिसमें , व्यक्ति के शरीर के कुछ अंग न होने के कारण अथवा शरीर के अंग होने के होते हुए भी उन अंगो का कार्य सही रुप से नहीं कर पाता है , जैसे – ऑखे होते हुए भी अंधत्व के कारण दिखाई न देना , बुद्धि कम होने के कारण पढ़ाई न कर पाना , कान में दोष के कारण सुनाई न देना , उॅगलिया न होना व पोलियो से ग्रस्त होना इत्यादि । पहले इन्हें दिव्यांग की जगह ' विकलांग ' कहा जाता था, किंतु अब इनके लिए विकलांग के बजाए ष दिव्यांग ष शब्द का प्रयोग किया जाता है। दरअसल , 2015 के ' मन की बात ' कार्यक्रम में भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सर्वप्रथम दिव्यांग शब्द की शुरुआत की एवं उनके सुझाव से इस नाम का प्रचलन हुआ एवं तभी से इस शब्द का प्रयोग किया जाता है । विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दिव्यांगता को तीन चरणों में विभाजित किया है –

1. **क्षति (Impairment) :–** व्यक्ति के स्वास्थ्य से संबधित ऐसी अवस्थाऍ जिनमें शरीर के किसी भी अंग में किसी भी कार्य हेतु दुर्बलता दिखाई देती हैं।
2. **दिव्यांगता (Disability) :–** जब शारिरीक संरचनात्मक क्षति के कारण व्यक्ति लंबे समय तक अपने दैनिक क्रियाकलापों से वंचित हो जाता है , तब इस अवस्था को कोदिव्यांगता कहा जाता है।
3. **बाधिता (Handicap) :–** दिव्यांगता के कारण बाधिता निर्मित होती है। जब व्यक्ति अपने दैनिक क्रियाकलापों को पूरा करने में सक्षम नही होता तब उसे समाज की विभिन्न प्रकार की गतिविधियों एवं मुख्यधाराओं से वंचित होना पड़ जाता है। अर्थात व्यक्ति जब समाज द्वारा अपने अपेक्षित भूमिका को निभा पाने में असमर्थ होता है , तब इस अवस्था को बाधिता कहते है।

समाज की धारणा :–

मानव इतिहास के पन्नों पर हम देखते है कि जो सबल है वही शासन करता है , सत्ता उन्हीं के पास होती है और जो निर्बल है, असहाय है , जैसे – शारिरीक , मानसिक व आर्थिक रुप से , वे प्रत्यक्ष रुप से सत्ता की पहुचॅ से दूर होते है। दिव्यांगता को मानव समाज में हीन भावना से देखा जाता है । ऐसा समझा जाता है कि पूर्वजन्म में उन्होने कुछ बुरे कर्म किए है इसलिए वे दिव्यांगता को प्राप्त हुए है , इस हेतु सारा दोष उन्हीं को दिया जाता है। समाज की ऐसी विकृती सोच को बढावा देने से मानसिक विषमता का जन्म होता है।

समाज के हर वर्ग में ऐसी सोच व्याप्त हैं , जिसके कारण दिव्यांगता के प्रति सहानुभूति पैदा नही हो पाती। समाज को अपने अंदर **वसुधैव कुटुंब** की भावना जगानी होगी , तभी संसार में प्रत्येक जीव के प्रति समानता की भावना पैदा हो पाएगी ।

ऐसी अवधारणा को बदलना होगा ताकि एक सभ्य समाज का निर्माण हो सके । वर्तमान समाज की तुलना करे तो कुछ प्रतिशत में सोचे बदली है , जो निसहाय व दिव्यांगता के प्रति सहानुभूति की भावना रखते है। दया , क्षमा और करुणा की भाव होने से संसार में समस्त जीवों के प्रति अपनापन का भाव उदय हुआं है , और ये होना भी चाहिए। जब समाज के सभी वर्ग के लोग अपनी अवधारणा को अंतः करण के मूल भाव के रिश्ते से जोड़ देगे तो एक नए समाज का निर्माण होगा जो संपूर्ण विश्व के साथ – साथ भारत की नई दिशा व दशा बदलने में सहायक सिद्ध होगी।

विभिन्न समस्याऍ :–

प्रत्येक दिव्यांग को अपने संपूर्ण जीवन काल में विभिन्न प्रकार की समस्याओं व चुनौतियों जैसे :– रंग , लिंग , भाषा , धर्म , जन्म , आयु , जातीयता , इत्यादि का सामना करना पड़ता है । समाज के तानो के साथ – साथ उन्हें अपने नीजी जीवन में आए अनेकों प्रकार की अड़चनों का सामना करना पड़ता है , जो शायद ही कभी समाप्त होंगी । परंतु अपने जीवन को आगे बढ़ाने व चलाने हेतु उन्हें उन सभी चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पड़ता है , जो उनके जीवन में अपनी हाज़री लगाती है। हर दिव्यांग को अपने जीवन में , हर क्षेत्र में लड़ना

पड़ता है , चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में हो या व्यावसायिक के , चाहे वह विवाह संबंधी समस्याएँ हो या स्वास्थय संबंधी , ये समस्याएँ शायद ही कभी उनके लिए खत्म होंगी और भी अनेक प्रकार की समस्याएँ दिव्यांगो के लिए है , जो उनके जीवन पर काफी बड़ा प्रभाव डालती है , वे निम्न है :–

❖ दैनिक समस्या :–

जितने भी कार्य एक सामान्य व स्वस्थ व्यक्ति करता है , उन सभी कार्यो को करने में दिव्यांगो को समस्याएँ होती है । यदि कोई व्यक्ति पैरों से दिव्यांग है , तो उसे चलने में या कही आने – जाने में समस्या का सामना करना पड़ेगा , या फिर कोई व्यक्ति हाथों से दिव्यांग है , तो उसे , खाना – खाने , अपने संपूर्ण नीजी काम करने में समस्या होगी। इसके अलावा यदि कोई ऑखों से दिव्यांग हो तो उसे देखने , आने – जाने वकाम करने में समस्या होगी एवं यदि कोई कानों से सुन नहीं सकता तो उसे लोगो से बातचीत करने में ,अपनी बात रखने में , सामान लेने जैसे रोज़मर्रा के कामो में दिक्कते आएंगी ।

❖ आर्थिक समस्या :–

एक सामान्य व्यक्ति को स्वयं अनेकों प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है तो ऐसे में दिव्यांगो की समस्याओ का कहना ही क्या है । आर्थिक समस्या में दिव्यांगो हो निम्न समस्या का सामना करना पड़ता है :–

- सरकारी नौकरियों में रिक्त पदों की संख्या कम होना ।
- प्राईवेट सेक्टरो में नौकरी न देना ।
- स्वयं से शारिरीक परिश्रम का न होना ।
- परिवारिक सहयोग का प्राप्त न होना ।
- परिवारिक पर ही र्निभर होना।
- दिव्यांगता होने के कारण कृषि जैसे क्षेत्रो में काम न कर पाना ।
- स्वयं में आत्मनिर्भर न होना ।

- साकारात्मक सोच की कमी ।

समाजिक समस्या :– दिव्यांगो को अपने जीवन में बड़े तौर पर सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिनमे मुख्य रुप से निम्न है :–

- समाज की मंदबुद्धि सोच ।
- समाज में एकरुपता का न होना ।
- समाज में भाग्यवादि सोच को बढ़ावा देना ।
- समाज में **' सर्वे भवन्तु सुखिनः – सर्वे संतु निरामया'** के कथनी व करनी में अंतर।
- समाज में सदभाव गुणों का अभाव होना ।

❖ **शैक्षिक व मानसिक समस्या :–** शिक्षा के वर्ग में दिव्यांगो को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे निम्न है :–

- परिवार का सहयोग न मिलने से शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा से वंचित होना ।
- स्वयं में आत्मनिर्भर न होने के कारण अपने माता – पिता को प्रोत्साहित न करना ।
- दिव्यांगता होने के कारण शैक्षणिक पठन – पाठन न कर पाना ।

व मानसिक समस्याएँ निम्न है :–

- मनोविचार की कमी ।
- मनोबल बढ़ाने हेतु आपसी सहयोग की कमी ।
- परिवारजनों मे सुदिर्घ भाव की कमी ।
- मानसिक क्षमता की कमी ।
- मनोवैज्ञानिक रुप से उपचार न हो पाना ।

❖ **सरकार के प्रयास एवं योजना :–** केंद्रिय सरकार व राज्य सरकार , दिव्यांगो के कल्याण हेतु व उनके जीवन को और बेहतर एवं सरल बनाने हेतु अनेक प्रयास के रुप में विभिन्न

योजनाएँ संचालित कर रहीं है। ये योजनाएँ दिव्यांगो के जीवन को सरल व सुखद बनाने में काफी हद तक प्रभावपूर्ण साबित हुई है । ये निम्न है :–

- **दिव्यांग छात्र / छात्राओं को छात्रवृत्ति योजना** :– दिव्यांग छात्र आर्थिक विषमताओं के कारण शिक्षण या प्रशिक्षण प्राप्त नही कर पाते है जिससे उनका जीवन आत्मनिर्भर नही बन पाता। अतः इच्छुक छात्रों को इस योजना के अन्तर्गत , छात्रवृत्ति देकर शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जाता है।
- **दिव्यांग भरण पोषण योजना** :– देश – प्रदेश में अनेक दृष्टिबाधित , मूकबधिर व किसी भी प्रकार से शारीरिक रुप से दिव्यांग कई निराश्रित ऐसे है जिनके जीवन यापन हेतु न तो स्वयं का कोई साधन है और न ही वे ऐसे किसी प्रकार का परिश्रम करते है जिससे उनका भरण पोषण हो सके , इसी उददेश्य से निराश्रित दिव्यांगजनों को सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत जीवन यापन करने के लिए सरकार की कल्याणकारी योजना के अंतर्गत निराश्रित दिव्यांग भरण पोषण अनुदान दिए जाने की योजना लागू की गई है जिसे सामान्यतः दिव्यांग पेंशन योजना के नाम से भी जाना जाता है।
- **दक्ष दिव्यांगजनों एवं उनके सेवायोजको को राज्य स्तरीय पुरस्कार :–** अनेक दिव्यांग कर्मचारियो को अधिकाधिक रोजगार के अवसर सुलभ कराने के उददेश्य से राज्यस्तरीय पुरस्कार की योजना चलाई गई है । सरकार के द्वारा विभिन्न श्रेणी के दिव्यांग कर्मचारियोंको साथ ही साथ उनके सेवायोजको को राज्यस्तरीय पुरस्कार के रुप में कुल 50000/– रु की धनराशि नकद प्रदान की जाती है ।
- **दिव्यांगजनों हेतु शिविरो / सेमिनारो का आयोजन :–** दिव्यांगजनो को उनकी सुविधनुसार उनके नजदीकी क्षेत्रो में वार्षिक सत्यापन एवं पेंशन स्वीकृति किए जाने हेतु शिविरो एवे सेमिनारों का आयोजन किए जाने की व्यवस्था की जाती है।
- **दिव्यांग युवक / युवती विवाह प्रोत्साहन अनुदान :–** जब कोई भी सामान्य युवक , किसी भी युवती द्वारा दिव्यांग युवक / युवती से विवाह करता है , तब प्रोत्साहन अनुदान योजना के अंतर्गत , दिव्यांग युवक अथवा युवती से विवाह करने पर दम्पत्ति को क्रमशः 25,000 रुपयो का प्रोत्साहन अनुदान प्रदान किया जाता है।
- **दिव्यांगजनो हेतु आश्रित कर्मशालाएँ :–** शारीरिक रुप से दिव्यांगजनो के लिए राजकीय प्रशिक्षण केंन्द्र एवं आश्रित कर्मशालाएँ टिहरी गढ़वाल व नैनीताल , साथ ही पिथौरागड़

में संचालित है। इन कर्मशालाओं में दिव्यांग व्यक्तियों को शाल , साबुन , स्वेटर व मोमबत्ती आदि बनाने या बुनाई करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ।

❖ उपसंहार :–

अनेक दिव्यांग इस संसार में जन्म लेते है व अपना जीवनयापन , अत्यंत कठोर परिश्रम कर , अत्यंत कष्ट सह कर करते है। जीवन के शुरुआत से अंत तक उन्हें अनेक प्रकार की चुनौतियो एवं अड़चनों का सामना करना पड़ता है। अब समय है , इन्हें इनका हक पुनः दिलाने की , इन्हें तन एवं मन से पूर्णतः स्वीकार करने की व समाज में दिव्यांगो के प्रति चलित भेदभाव व छूआछूत को मिटाने की । अब केन्द्र सरकार व राज्य सरकार भी अनेक प्रकार की योजनाएँ संचालित कर दिव्यांगो को पूरा समर्थन प्रदान कर रहीं है , ताकि वे आत्मनिर्भर बन सके। जब सरकार के साथ – साथ , देश के नागरिक भी दिव्यांगो के प्रति छूआछूत व भेदभाव की भावना का त्याग कर व उनके लिए अपना पूरा समर्थन प्रदान देंगे तब दिव्यांग स्वयं में आत्मनिर्भर बन पाऐंगे और अपने लिए कुछ कर पाऐंगे साथ ही उन्हें ऐसा महसूस नहीं होगा कि वे इस संसार में अकेले है । समय है हम अपनी सोच को दिव्यांगो के प्रति और विकसित करें , तभी देश का विकास , इस क्षेत्र में हो पाएगा ।

संदर्भ :–

1. भारतीय दिव्यांग योजना राष्ट्रीय पोर्टल
2. जागरण अधिकारिक वेबसाइट
3. शिक्षा पुचामृत – लक्ष्मीनारायण भाला – 2022
4. इशुज़ इन एजुकेटिंग स्टुडेन्टस विथ डिसएबिलिटी – जॉन विल्स लॉयड , एडवर्ड जे कामेनोई , डेविड चार्ड – 2009
5. डिसएबिलिटी स्टडीज़ इन इंडिया – निलिका मेहरोत्रा – 2020